समकालीन हिन्दी साहित्य विमर्श

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) एस.आर.जयश्री

सहायक संपादक
डॉ. जयकुमारी के.
डॉ. गायत्री एन.
डॉ. दीपक के. आर

I.S.B.N. : 978-93-90265-20-6

पुस्तक : समकालीन हिन्दी साहित्य विमर्श

मुख्य सम्पादक : डॉ. एस. आर. जयश्री

सहायक सम्पादक : डॉ. जयकुमारी के., डॉ. गायत्री एन.
एवं डॉ. दीपक के. आर.

प्रकाशक : अमन प्रकाशन
104A/80C रामबाग, कानपुर-208 012(उ.प्र.)
मो. : 9044344050, 8960421760
ऑफिस 0512-3590496

संस्करण : प्रथम, सन् 2020

मूल्य : ₹ 120.00 मात्र

सर्वाधिकार : अध्ययन मण्डल

मुद्रक : आर.बी. आर्फसेट, नौबस्ता, कानपुर

शब्द सज्जा : अम्बुज ग्राफिक्स, आर.के. नगर, कानपुर

SAMKALEEN HINDI SAHITYA VIMARSH
Price : Rs. One Hundred Twenty Only

डॉ. विश्वासी

भूमिका

वर्तमान समय और समाज विभिन्न प्रकार की चुनौतियों तथा उनके प्रतिरोधों से गुजर रहे हैं। समकालीन हिन्दी साहित्य अपने सामाजिक सरोकारों के ऐतिहासिक सन्दर्भों को सरल-सीधे ढंग से अभिव्यक्त करते हुए अपनी सामाजिक पहचान का साक्ष्य प्रस्तुत कर रहा है। समकालीन साहित्य में उभरे विमर्शों का अध्ययन इस दृष्टि से करना संगत रहेगा।

केरल विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम के लिए तैयार की गयी इस पुस्तक में विभिन्न विद्वानों एवं विदुषियों के प्रौढ़ आलेख समाहित हैं। इसमें कथा साहित्य, कविता तथा अन्य गद्य विधाओं को विमर्श की दृष्टि से देखा-परखा गया है। छात्रों को साहित्यिक विमर्श की अवधारणाओं एवं स्वरूपों से अवगत कराने में ये अवश्य सहायक सिद्ध होंगे, यही हमारा विश्वास है।

– संपादक

अन्ना माधुरी तिर्की, उषा किरण आत्राम, विनायक तुका राम, धामुलाल ... उल्लेखनीय हैं।

आदिवासी साहित्य, एक अलग तरह का सौंदर्य रच रहा है, उसके सौंदर्य ... मानक मुख्यधारा से भिन्न है। अज्ञेय ने भी अपनी नायिका को चंद्रमा या हिरणी ... नहीं 'कलगी बाजरे की' कहा था, फिर आदिवासी साहित्य तो एक अलग ... का साहित्य है, अत: उनका सौंदर्यशास्त्र भी अलग है। मुख्यधारा के भाषा साहित्य ... सौंदर्यशास्त्र आनंद पर आधारित है, तो आदिवासी साहित्य नैसर्गिकता, पारदर्शि... आडंबरहीनता और निश्छलता जैसे मानकों पर आधारित है।

आदिवासी, विश्व का ऐसा मानव समुदाय है जिन्हें अपने पूर्वजों से ... सांस्कृतिक परम्परा प्राप्त है, ये 'जियो और जीने दो' जैसे विचारों के वाहक ... इजरायल के चर्चित इतिहासकार और दार्शनिक युवाल नोवा हरारी के अनुसार ''जंगल में रहने वाले लोग, खासकर आदिवासी, किसी भी विकसित समाज के ... से अधिक, सच के करीब हैं, क्योंकि वे अपनी पाँचों इन्द्रियों का इस्तेमाल सच ... जानने के लिए करते हैं, मसलन वे अपने जंगल को जहाँ वे रहते हैं, जानते हैं ... छू सकते हैं, देख सकते हैं। जिसे वे देख नहीं सकते, उस पर विश्वास नहीं करते'' सहजीविता, धारणीय विकास में विश्वास करने वाले आदिवासियों की जीवन विधि ... पूरे विश्व के लिए अनुकरणीय है। यदि लोग आदिवासियों जैसा संयमित और सा... जीवन जी सकें तो पृथ्वी दीर्घजीवी होगी और मानवता बची रहेगी।

डॉ. विश्वासी एक्का
सहायक प्राध्यापक - हिंदी
शासकीय राजमोहनी देवी कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा (छ.ग.)

●

दुलायचंद्र मुंडा

कवि-परिचय : मुंडारी के प्रमुख लोकप्रिय परंपरागत कवि-गीतकारों में से ... अ-गेय गद्यात्मक दुनिया से मुठभेड़ करनेवाले मुंडा आदिवासियों-कांडेसिंह ..., सुलेमान बडिंग, रामदयाल मुंडा के साथ की पहली पीढ़ी के सशक्त रचनाकार। ... के बारुडीह गाँव में 10 अक्तूबर, 1941 को जन्म। माँ पालो और पिता रामसिंह ...। दो भाई और दो बहनों में माता-पिता की तीसरी संतान। शिक्षकों के आंदोलन ... भरी अभियान के दौरान 7 जून, 1982 को जब हजारीबाग से लौट रहे थे, ... बिगड़ी और घर पहुँचकर निधन हो गया। उनकी आरंभिक शिक्षा बुरजू स्कूल ... एम.एस. हाई स्कूल खूंटी से हुई थी। इसके बाद राँची विश्वविद्यालय से ...शास्त्र में एम.ए. किया और जे.एन. कॉलेज, धुर्वा (राँची) में 1976 से प्राध्यापक ...। एम.ए. के दौरान ही उनकी शादी नवीं में पढ़ रही प्यारी टूटी से 7 जुलाई, 1968 ... हो गई थी। दोनों के चार बच्चे हुए, तीन लड़कियाँ और एक लड़का। इनका पहला ... काव्य-संग्रह मुंडा-सगनर (नव पल्लव) 1966 में और दूसरा संग्रह श्वम्बरूर (...) 1978 में प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त कई पत्र-पत्रिकाओं और ...कों में इनकी कविताएँ संकलित हैं तथा आकाशवाणी, राँची से अनेक गीतों के ...ण हुए हैं। इनके गीतों में मिट्टी की वही गंध, जंगलों की वही हरियाली और ... का वही संगीत और आदिवासियत विद्यमान है, जो सदा से मुंडा एवं आदिवासी ... की विशेषता रही है। विषयवस्तु और शिल्प दोनों पक्षों में ये अपनी परंपरा के ... निकट हैं। वे ही उपमान, वे ही प्रतीक, पंक्तियों की वही पुनरावृत्ति, वे ही छंद, ...होंने सारी मुंडा कविता का श्रृंगार किया है, इनकी कविताओं में हैं।

अप्र
अमन प्रकाशन
104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर-208012 (उ.प्र.)
मोबाइल नं. : 8090453647, 9839218516
फोन : 0512-3590496
ईमेल : amanprakashanknp@gmail.com
वेबसाइट : www.amanprakashan.com
₹ 120/-
ISBN : 978-93-90265-20-4